शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

हिंदू धर्म की अनुपम देन : भगवद्गीता

विनोबा

हिंदूधर्म के तत्वज्ञान को भलीभांति प्रकाशित करने वाला कोई एक ग्रंथ बताना हो तो भगवद्गीता का नाम ले सकते हैं। लोकमान्य तिलक कहते हैं कि "आध्यात्मिक पूर्णदशा का परिचय कराने वाले और संक्षेप में चराचर जगत के गूढ़ तत्वों को स्पष्ट करने वाला गीता के समान कोई ग्रंथ, समस्त विश्व की किसी भाषा में नहीं है। हिंदूधर्म और नीतिशास्त्र के मूल तत्व जिनको जानने की इच्छा हो, उसको इस अपूर्व ग्रंथ का अवश्य सर्वप्रथम अध्ययन करना चाहिए। हिंदूधर्म के तत्वों को संक्षेप में और असंदिग्ध रूप से समझा जा सके ऐसा गीता के समान अन्य कोई ग्रंथ संस्कृत साहित्य में नहीं है।"

भगवद्गीता श्रीकृष्ण की अनुपम देन है। कृष्ण के रूप में हिंदूधर्म में एक अलौकिक व्यक्तित्व प्रकट हुआ है। यहां तक कि कई लोग उसे पूर्णावतार मानते हैं। राम को अपने यहां मर्यादा पुरुषोत्तम माना जाता है और कृष्ण को लीला पुरुष। कृष्ण ने जीवन के किसी अंग को अछूता नहीं रखा है। उनकी बाललीला के साथ उनकी निर्दोष वृंदावन लीला और महाभारत के युद्ध में पारमार्थिक उद्बोधन, सबके अपने-अपने जीवन लक्षी संकेते हैं। श्रीकृष्ण के पहले भारत में तत्वज्ञान के जो मूलभूत विभिन्न विचार थे, उन सबका समन्वय कर कृष्ण ने गीता के रूप में मानो एक नया तत्वज्ञान ही प्रकट किया है। वेद उपासनाप्रधान है, उपनिषद ज्ञानप्रधान, भागवत भक्तिप्रधान, रामायण नीतिप्रधान - ऐसी कितनी ही विचारसरणियों का गीता में समन्वय पाया जाता है। कहीं आटा था, कहीं चीनी थी, कहीं घी था। भिन्न-भिन्न जगह पड़े हुए विचारों का समन्वय कर गीता ने मीठा लड्डू बनाकर हमें परोसा है।

भगवद्गीता के रूप में कृष्ण ने जो उपदेश दिया है, उस उपदेश ने हिंदुस्तान के 5 हजार सालों की विचारप्रणाली को प्रभावित किया है और भगवद्गीता का वह विचारप्रभाव आज भी ज्यों का त्यों चला है। इतनी बुलंदी और शाश्वती है, उस उपदेश में। हिंदूधर्म का हार्द उसमें प्रकट हुआ है। वेदांत का सार बताता है पुरुषोत्तम योग नाम का गीता का 15वां अध्याय। उसमें साधना भी बतायी है और तत्वज्ञान भी बताया है। तत्वज्ञान यानी विचार। जीवन को वैचारिक बैठक नहीं मिलती है तो वह बिखर जाएगा, मनुष्य भटक जाएग। वैचारिक बैठक मिलने से उसे दिशा मिलती है। तो तत्वज्ञान विचार देता है और उसके अनुसार आचरण करना साधना सिखाती है। जीवन में दोनों का जितना मेल बैठा पाते हैं, उतना-उतना जीवन आत्माभिमुख बनता है। कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग की त्रिपुटी भगवदस्वरुप में विलीन हो गयी है। शेष रहता है तीनों का अद्वैत। वही आत्मज्ञान की पूर्णावस्था। क्रियावस्था, भावावस्था, ज्ञानावस्था - तीनों का द्वैत वहां समाप्त हो जाता है उअर अद्वैत के परमोच्च शिखर पुरुषोत्तम योग तक पहुँच जाती है। फिर जड़-चेतन-परम चेतन का भेद नहीं रह जाता। (हिन्दू धर्म का तत्व : मैत्री नवम्बर 2015 से साभार)